Jai Ambe Gauri

Traditional, author unknown · rashikundli.com

जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी
तुमको निशदिन ध्यावत,
हरि ब्रह्मा शिवरी
ॐ जय अम्बे गौरी..
मांग सिंदूर विराजत,
टीको मृगमद को
उज्ज्वल से दोउ नैना,
चंद्रवदन नीको
ॐ जय अम्बे गौरी..
कनक समान कलेवर,
रक्ताम्बर राजै
रक्तपुष्प गल माला,
कंठन पर साजै
ॐ जय अम्बे गौरी..
केहरि वाहन राजत,
खड्ग खप्पर धारी
सुर-नर-मुनिजन सेवत,
तिनके दुखहारी
ॐ जय अम्बे गौरी..
कानन कुण्डल शोभित,

नासाग्रे मोती

कोटिक चंद्र दिवाकर,

सम राजत ज्योती

ॐ जय अम्बे गौरी..

शुंभ-निशुंभ बिदारे,

महिषासुर घाती

धूम्र विलोचन नैना,

निशदिन मदमाती

ॐ जय अम्बे गौरी..

चण्ड-मुण्ड संहारे,

शोणित बीज हरे

मधु-कैटभ दोउ मारे,

सुर भयहीन करे

ॐ जय अम्बे गौरी..

ब्रह्माणी, रुद्राणी,

तुम कमला रानी

आगम निगम बखानी,

तुम शिव पटरानी

ॐ जय अम्बे गौरी..

चौंसठ योगिनी मंगल गावत,

नृत्य करत भैरों

बाजत ताल मृदंगा,

अरु बाजत डमरू

ॐ जय अम्बे गौरी..

तुम ही जग की माता,

तुम ही हो भरता,

भक्तन की दुख हरता

सुख संपति करता

ॐ जय अम्बे गौरी..

भुजा चार अति शोभित,

वर मुद्रा धारी

मनवांछित फल पावत,

सेवत नर नारी

ॐ जय अम्बे गौरी..

कंचन थाल विराजत,

अगर कपूर बाती

श्रीमालकेतु में राजत,

कोटि रतन ज्योती

ॐ जय अम्बे गौरी..

श्री अंबेजी की आरती, जो कोई नर गावे

कहत शिवानंद स्वामी,

सुख-संपति पावे

ॐ जय अम्बे गौरी..

जय अम्बे गौरी,

मैया जय श्यामा गौरी

Where this text comes from: BhaktiBharat
Written and reviewed by the RashiKundli Editorial Team · rashikundli.com